अध्याय- तृतीय

शोध -प्रविधि

अध्याय –तृतीय
शोध–प्रविधि

3.1 प्रस्तावना

3.2 शोध प्रक्रिया

3.3 शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर

3.4 प्रतिदर्श चयन

3.5 शोध में प्रयुक्त उपकरण

3.6 प्रदत्तों का संकलन

3.7 प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

अध्याय –तृतीय

शोध प्रविधि

3.1 प्रस्तावना –

अनुसंधान या शोध कार्य में निश्चित और सही दिशा की और अग्रसर होने के उद्देश्य से यह आवश्यक होता है कि शोध प्रबंध की व्यवस्थित रूपरेखा तैयार की जाये क्योंकि यह रूपरेखा ही शोधकार्य मे निश्चित दिशा प्रदान करती है। इस में प्रतिदर्श चयन की अपनी विशेष भूमिका होती है। इसके उपकरणों एवं तकनीक का चयन भी महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि इस आधार पर प्रदत्तों का संकलन किया जाता है। इसके पश्चात उपयुक्त सांख्यिकीय विधि के माध्मय से प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या कर निष्कर्ष निकाला जाता है।

"अनुसंधान उन समस्याओं के समाधान की विधि है जिनमें अपूर्ण अथवा पूर्व समाधान तथ्यों के आधार पर खोजना है। अनुसंधान के लिए तथ्य लोगों के मत के कथन, ऐतिहासिक तथ्य, लेख अथवा अभिलेख, परीक्षणों से प्राप्त परीणाम, प्रश्नावली के उत्तर, अपने प्रयोगो से प्राप्त सामग्री हो जाती है।

– डब्ल्यू एस मौनारो

3.2 शोध प्रक्रिया –

प्रस्तुत अध्ययन के लिए न्यायदर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। इसके लिए गुजरात राज्य में नवसारी जिले के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयो में से छ विद्यालयों को चुना गया। जिसमें 120 विद्यार्थियों का चयन हुआ। प्रस्तुत अध्ययन के लिए प्रदत्तों के संकलन हेतु कक्षा–7 के छ विद्यालयों के विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा में आनेवाली अधिगम कठिनाईयों को ध्यान में रखते हुए प्रश्नपत्र तैयार किया गया। प्रश्नपत्र का स्वयं निर्माण किया गया तथा 120 विद्यार्थियों से प्रश्नपत्र भरवाया गया।

प्रस्तुत शोध हेतु प्रदत्तों का संकलन करने के लिए गुजरात राज्य से नवसारी जिले के शासकीय एवं अशासकीय तथा ग्रमीण और शहरी विद्यालयों में से छ विद्यालयों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। शोधकर्ता ने प्रत्येंक प्राथमिक विद्यालय में अलग-अलग निर्धारित तिथि, स्थान और समय पर विद्यालय में स्वंय जाकर प्राचार्यो से मिलकर बातचीत की और अपना परिचय देकर अपने आने का उद्देश्य बताकर शिक्षक-शिक्षिकाओं को लघुशोध प्रबंध विषय की जानकारी दी। हर विद्यालय के कक्षा -7 में शोधकर्ता ने स्वयं जाकर विद्यार्थियों को प्रश्नपत्र के बारे में जानकारी देकर उनसे प्रश्नपत्र भरवाया गया।

अध्ययन हेतु स्वंय निर्मित उपकरण के माध्यम से अध्ययन हेतु चुने हुए न्यादर्श द्वारा प्रदत्तों का संकलन किया गया। स्वनिर्मित परिकल्पनाओं की स्वीकृति तथा अस्वीकृति हेतु प्रदत्तों को समूह व. उपसमूह में विभाजित कर विश्लेषण तथा अंतिम परिणाम ज्ञात किया जाता है। प्रदत्तों के विश्लेषण के अन्तर्गत उनकी समस्याओं का उनके परीक्षणों द्वारा शोध के उद्देश्यों का निर्णय प्राप्त किया जाता है। विधियों का उपयोग किया जाता है। परिकल्पना की जाँच करने के उपरांत त्वरित प्रदत्तों के निरंतर प्रस्तुतीकरण के लिए शोध समस्या के अध्ययन से निकले परिणाम की व्याख्या की जायेगी।

3.3 शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर -

शाब्दिक रूप से Variable शब्द का अर्थ होता है कि जो Vary कर सके यानि जो परिवर्तित हो सकें।

चर से एक ऐसी स्थिति व गुण का बोध होता है कि जिसके स्वरूप में एक वैज्ञानिक अध्ययन के अन्तर्गत एक आयाम पर विभिन्न मात्रात्मक तथा गुणात्मक परिवर्तन होते रहते हैं।

वह मुख्यतः दो प्रकार के होते है।

1. स्वतंत्र चर

2. आश्रित चर

1. **स्वतंत्र चर –**

साधारणतः प्रयोगकर्ता जिस कारक के प्रभाव का अध्ययन करना चाहता है और प्रयोग से जिस पर नियंत्रण रहता है उसे स्वतंत्र चर कहते है। प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित स्वतंत्र चर है।

- ❖ लिंग – छात्र, छात्राऐं
- ❖ विद्यालय का प्रकार – सरकारी, गैरसरकारी
- ❖ विद्यालय का स्थान – ग्रामीण, शहरी

2. **आश्रित चर –**

स्वतंत्र के प्रभाव के कारण जो व्यवहार में परिवर्तन होता है, और जिसका अध्ययन व मापन किया जाता है उसे आश्रित चर कहते है।

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित आश्रित चर हैं।

- ❖ हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाई

3.4 प्रतिदर्श चयन –

प्रतिदर्श किसी भी अनुसंधान कार्य की आधारशिला हैं। वह आधारशिला जितनी सुदृढ़ होगी अनुसंधान के परिणाम उतने ही विश्वसनीय व परिशुद्ध होंगे। प्रतिदर्श को तभी उपयुक्त माना जा सकता है, जब संपूर्ण समष्टि का वह वास्तविक प्रतिनिधि है या नही। इसकी एक कसौटी यह है कि प्रतिदर्श के स्थान पर संपूर्ण समिष्ट का अध्ययन किया जाये तो परिणामों में सार्थक अंतर नहीं पड़ना चाहिए। प्रतिदर्श जनसंख्या का वह अंश है जिसमें अपनी जनसंख्या की समस्त विशेषताओं को स्पष्ट प्रतिबिंब रहता है। प्रतिदर्श के चयन से व्यय में कमी, समय व शक्ति का बचाव कम

समय में बड़े क्षेत्र का अध्ययन हो पाता है और अधिक सही परिणाम प्राप्त होते है।

प्रतिदर्श चयन के लिए शोधकर्ता ने यादृच्छिक विधि से अपनी सुविधा अनुसार गुजरात राज्य के नवसारी जिले के 6 स्कूल को लिया। इस अध्ययन में 6 स्कूलों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया जिसमें 3 शहरी और 3 ग्रामीण विद्यालय हैं।

❖ <u>प्रतिदर्श प्रमाण–</u>

शोधकार्य में परिकल्पनाओं को ताक्रिक आधार प्रदान करने के लिए प्रतिदर्श के रूप में 120 विद्यार्थी लिये गये। जिनका विवरण रेखाचित्र में दिया गया है।

गुजरात राज्य के नवसारी जिले के छ

प्राथमिक विद्यालय

3 ग्रामीण विद्यालय　　3 शहरी विद्यालय

6 प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 7 के 120 विद्यार्थियों को लिया गया।

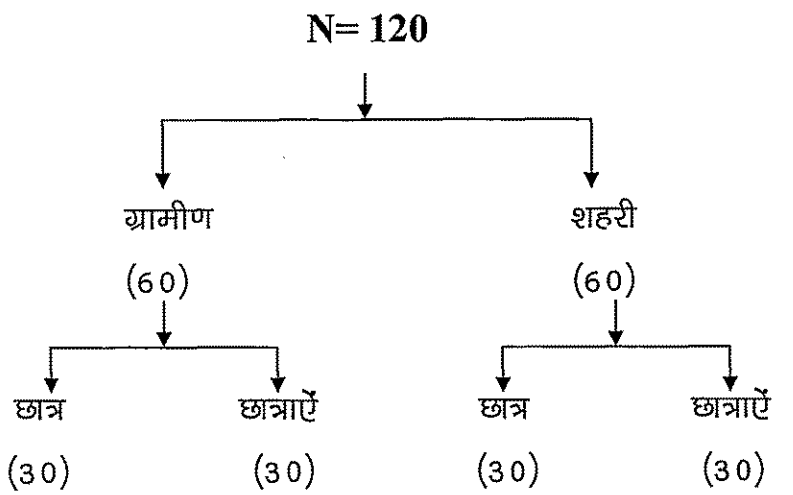

3.5 उपरकण –

किसी भी शोध के लिए उपकरणों का होना बहुत आवश्यक है। क्योंकि बिना उपकरणों के आंकड़े एकत्रित करना मुश्किल कार्य है। उपकरणों का चयन एवं उपयोग बड़ी सावधानी पूर्वक किया जाना चाहिए, जिससे परिणाम की विश्वसनीयता पर संदेह न किया जा सकें।

प्रस्तुत अनुसंधान में शोधकर्ता द्वारा प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा–7 के विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा में आनेवाली कठिनाईयों के बारे में 10 प्रश्नों का स्वयं निर्मित उपकरण तैयार करने के बाद निर्देशक एवं विशेषज्ञ से सभी प्रश्नो की जाँच कराई गई तथा उनकी सलाह के अनुसार कुछ प्रश्नों में सुधार किया गया।

इस अध्ययन में कक्षा–7 (गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल) की हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक अनुसार उपकरण (प्रश्नपत्र) तैयार किया गया। यह प्रश्नपत्र मार्गदर्शक एवं विशेषज्ञ द्वारा जाँचा गया।अध्ययन हेतु नवसारी जिले के ग्रामीण एवं शहरी छ विद्यालयों से आंकड़ो को एकत्रित किया गया।

3.6 प्रदत्तो का संकलन –

परीक्षण पूर्णरूपेण तैयार करने के बाद प्रदत्तों के संकलन हेतु विद्यालय द्वारा एक निश्चित समय सीमा दी गई। अध्ययन हेतु नवसारी जिले के ग्रामीण एवं शहरी छः विद्यालयों से आँकड़ो को एकत्रित किया गया।

सर्वप्रथम नवसारी जिले के छ विद्यालय पसंद करके उन सभी विद्यालयों के प्राचार्यो से मुलाकात कर अपनी शोध के बारे में बताकर उनसे तारीख व समय निर्धारित किया गया। निर्धारित दिनों पर एक–एक विद्यालय में जाकर शिक्षकों से बातचीत कर शोध के बारे में जानकारी दी गई। उसके बाद कक्षा–7 के विद्यार्थियों के वर्ग

में जाकर प्रश्नपत्र के बारे में बताया गया और उनसे सामान्य माहिती को भरने के लिए बताया गया। उसके बाद 1 घंटे का समय दिया गया जिसमें विद्यार्थियों ने अपने-अपने प्रश्नपत्र का उत्तर दिया। उत्तर प्रश्नपत्र में ही देने को कहा गया और यह ध्यान दिया गया कि कोई विद्यार्थी एक-दूसरे में से नकल न करें।

नवसारी जिले के तीन शहरी विद्यालयों के नाम निम्नलिखित है।

1. शारदा विद्या मंदिर
2. सरदार पटेल विद्या मंदिर
3. नीलकंठ विद्यालय

नवसारी जिले के ग्रामीण क्षेत्र के तीन प्राथमिक विद्यालय को चुना गया था जिनके नाम निम्नलिखित हैं।

1. अड़दा प्राथमिक शाला
2. कछोल प्राथमिक शाला
3. खडसुपा प्राथमिक शाला

इस तरह छ विद्यालयों में से प्रदत्तों का संकलन कर कुल 120 विद्यार्थियों के पास से प्रश्नपत्र भरवाया गया।

3.7 प्रयुक्त सांख्यिकी -

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु शोधकर्ता ने निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया।

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन
3. टी मान